75th Anniversary of The First Flag Hoisting at Port Blair

Port Blair in modern times, as the capital of the Andaman and Nicobar Islands, is a picturesque tourist location and serves as the gateway to pristine beaches and exotic marine life. To those interested in history, the place is a constant reminder of "Kala Paani" housing the Cellular Jail as well as the stories of torture and inhuman acts meted out to the prisoners, most of them being Indian revolutionaries of the freedom struggle. The first batch of freedom fighters of First War of Independence was brought here on 10 March, 1858, thus marking the beginning of the penal settlement. Since then, the convicts brought here, mostly political prisoners, suffered life imprisonment and hard labour under cruel and degrading conditions. Many were hanged, while others died of disease and starvation.

The Cellular Jail, now a National Memorial is a witness to the glorious contribution of revolutionary patriots in the history of the Indian Freedom Movement. Many charismatic personalities were imprisoned here. Veer Savarkar, Ganesh Damodar Savarkar, Barindra Kumar Ghosh, Ullaskar Dutt, Indu Bhushan Roy, Prithvi Singh Azad, Trailokyanath Chakravarthy, Mahavir Singh among others; the catalogue is long and distinguished. The stories of their suffering and sacrifice for India's independence and their defiance and valour in the face of imperial oppression, have elevated the Cellular Jail to a place of pilgrimage in India's collective national memory.

The more significant fact however, is that Port Blair was the first Indian territory liberated from imperial British rule. In 1943-44 during World War II, this territory served as the headquarters of the Azad Hind government under Netaji Subhas Chandra Bose. The island at the time was liberated from British rule by Japan which captured it during the World War-II.

Netaji, accompanied by members of the Azad Hind Government and his staff had paid an official visit to the Andaman Islands from 29-31 December, 1943. He stayed at the former British Chief commissioner's official residence on Ross Island. His visit followed the Japanese Prime Minister's historic declaration at the Assembly of Greater East Asiatic Nations in Tokyo on 6 November, 1943 that the Andaman and Nicobar Islands would be transferred to the Provincial Government of Azad Hind.

On 30 December, 1943 Netaji addressed a mass rally of Indians at the Gymkhana ground in front of the Andaman Club. On the same day, he hoisted the Tricolour for the first time at the Gymkhana Ground in Port Blair. He also announced the Islands as the first Indian Territory freed from the British rule.

After the flag hoisting, Netaji visited the Cellular Jail the same afternoon. He spent two hours there going around the Indian Bastille. Describing his visit to the islands later, Netaji said, "For Indians the return of the Andaman represents the first territory to be liberated from British yoke. By the acquisition of this territory, the provisional government has now become a national entity in fact as well as in name. The liberation of the Andamans has symbolic significance because the Andaman has always been used by the British as a prison for political prisoners. Most of the political prisoners sentenced to servitude for conspiracies to overthrow the British Government-and there have been hundreds of them – were looked up in this island. Like the Bastille in Paris, which was liberated first in the French Revolution, setting free political prisoners, the Andaman where our patriots suffered is the first to be liberated in India's fight for independence." Netaji named Andaman Island as "Shaheed" and Nicobar Island as "Swaraj".

Today, the place where Netaji hoisted the flag stands as a great memorial.

Department of Posts is proud to release a set of three Commemorative Postage Stamps the total of whose denominations adds up to Rs. 75/- to mark the historic occasion of the 75th Anniversary of the first flag hoisting at Port Blair.

Credits:

Text	:	Sh. Pallab Bose and material provided by the proponent.
Stamps / FDC / Brochure	:	Sh. Sankha Samanta
Cancellation Cachet	:	Smt. Neenu Gupta

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India

पोर्ट ब्लेयर में प्रथम ध्वजारोहण की 75वीं वर्षगांठ
75th ANNIVERSARY OF THE FIRST FLAG HOISTING AT PORT BLAIR

विवरणिका BROCHURE

पोर्ट ब्लेयर में प्रथम ध्वजारोहण की 75वीं वर्षगांठ

आधुनिक समय के अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह की राजधानी, पोर्टब्लेयर, एक मनोहारी पर्यटक स्थल है तथा खूबसूरत समुद्री–तटों एवं अद्भुत समुद्री जीवों की दुनिया का प्रवेश द्वार है। इतिहास में रुचि रखने वाले व्यक्तियों को यह स्थान निरंतर "काला पानी" का स्मरण कराता है, जहां 'सेल्युलर जेल' थी, और जहां कैदियों पर किए जाने वाले अत्याचारों और अमानवीय कृत्यों की कई कहानियां दफन हैं। इन कैदियों में अधिकांश स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले क्रांतिकारी थे। स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम लड़ाई के स्वतंत्रता सैनानियों का पहला जत्था, यहां 10 मार्च, 1858 को लाया गया। इस प्रकार, इस दिन यहां बंदीगृह की शुरुआत हुई। उसके बाद से, यहां लाए गए राजनीतिक बंदियों को कठोर और अमानवीय परिस्थितियों में आजीवन कारावास में रहना पड़ा था। बहुतों को फांसी दी गई, जबकि अनेक बंदी, बीमारी और भुखमरी से मृत्यु को प्राप्त हुए।

एक राष्ट्रीय स्मारक के रूप में तब्दील सेल्युलर जेल, भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में, क्रांतिकारी देशभक्तों के उत्कृष्ट योगदान का साक्षी है। इस सेल्युलर जेल में कई प्रभावशाली व्यक्तियों को कैद किया गया था, जिनमें वीर सावरकर, गणेश दामोदर सावरकर, बरिन्द्र कुमार घोष, उल्लासकर दत्त, इन्दु भूषण रॉय, पृथ्वी सिंह आजाद, त्रिलोक्यनाथ चक्रवर्ती, महावीर सिंह आदि शामिल हैं। यह सूची बहुत बड़ी है और इसमें कई प्रतिष्ठित लोग शामिल हैं। भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए, उनके कष्ट और बलिदान तथा ब्रिटिश राज के अत्याचारों का सामना और उनके शौर्य की गाथाओं ने 'सेल्युलर जेल' को भारत की सामूहिक राष्ट्रीय स्मृति में एक धार्मिक स्थल का दर्जा दिया है।

तथापि अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि पोर्ट ब्लेयर प्रथम भारतीय क्षेत्र था, जिसे साम्राज्यवादी ब्रिटिश शासन से मुक्त करवाया गया। 1943–44 में द्वितीय विश्व–युद्ध के दौरान यह क्षेत्र नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में बनी आजाद हिन्द सरकार का मुख्यालय था। द्वितीय विश्व–युद्ध के दौरान ब्रिटिश शासन द्वारा अपने अधीन किए गए इस द्वीप को उस समय जापान द्वारा ब्रिटिश शासन से मुक्त कराया गया था।

नेताजी ने आजाद हिन्द सरकार के सदस्यों और अपने सहयोगियों के साथ 29–31 दिसम्बर, 1943 के दौरान अंडमान द्वीपसमूह का सरकारी दौरा किया। इस दौरान वे पूर्व ब्रिटिश मुख्य आयुक्त के रोस आईलैंड स्थित सरकारी आवास पर ठहरे। उन्होंने यह दौरा, ग्रेटर ईस्ट एशियाटिक नेशन्स की 6 नवम्बर, 1943 को टोक्यो में आयोजित सभा में जापान के प्रधानमंत्री द्वारा की गई ऐतिहासिक घोषणा के बाद किया, जिसमें उन्होंने अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह को आजाद हिन्द की प्रादेशिक सरकार को स्थानान्तरित किए जाने की बात कही थी।

30 दिसम्बर, 1943 को नेताजी ने अंडमान क्लब के सामने जिमखाना ग्राउंड में भारतीयों की एक विशाल रैली को संबोधित किया। उसी दिन उन्होंने पोर्टब्लेयर में जिमखाना ग्राउंड पर पहली बार तिरंगा फहराया। उन्होंने यह भी घोषणा की कि यह द्वीपसमूह प्रथम भारतीय क्षेत्र है, जिसे ब्रिटिश शासन से मुक्त कराया गया है।

ध्वजारोहण के पश्चात नेताजी ने उसी दिन दोपहर को सेल्युलर जेल का दौरा किया। वहां पर उन्होंने भारतीय बैस्टील में घूमते हुए दो घंटे बिताए। बाद में इस द्वीपसमूह के अपने दौरे के बारे में वर्णन करते हुए, नेताजी ने कहा, "भारतीयों के लिए अंडमान की आजादी अंग्रेजी शासन से स्वतंत्र होने वाले पहले क्षेत्र का प्रतीक बन गई है। इस क्षेत्र को अधिकार में करके इस अस्थाई सरकार ने वास्तविकता में और नाम से राष्ट्रीय सत्ता के रूप में अपनी पहचान बना ली है। अंडमान की स्वतंत्रता का सांकेतिक महत्व है, क्योंकि ब्रिटिश हुकूमत द्वारा अंडमान का प्रयोग सदैव राजनीतिक कैदियों के लिए एक जेल के रूप में किया गया है। अधिकतर राजनीतिक कैदियों को ब्रिटिश सरकार को उखाड़ फैंकने के लिए षड्यंत्र के आरोप में काला पानी की सजा दी गई और इनकी संख्या सैकड़ों में है जिन्हें इस द्वीप में बंदी बनाकर रखा गया। पेरिस के बैस्टील की तरह, जिसे पहले फ्रांसीसी क्रांति के दौरान मुक्त कराया गया और राजनीतिक कैदियों को कैद से छुड़ाया गया, उसी तरह अंडमान भी स्वतंत्र होने वाला पहला क्षेत्र बना, जहां भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष के लिए कैद किए गए देशभक्तों को कष्ट उठाने पड़े।" नेताजी ने अंडमान द्वीप को "शहीद" तथा निकोबार द्वीप को "स्वराज" का नाम दिया।

आज, वह स्थान एक भव्य स्मारक स्थल है, जहां नेताजी ने ध्वजारोहण किया था।

डाक विभाग पोर्टब्लेयर में प्रथम ध्वजारोहण की 75वीं वर्षगांठ के ऐतिहासिक अवसर पर तीन स्मारक डाक टिकटों का एक सेट, जिनकी कुल मूल्यवर्ग 75/– रू. है, को जारी करते हुए गौरव का अनुभव करता है।

आभार:–

पाठ	:	श्री पल्लब बोस तथा प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित।
डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका	:	श्री शंख सामन्त
विरूपण मोहर	:	श्रीमती नीनू गुप्ता

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	4100 पैसा, 2200 पैसा, 1200 पैसा
Denomination	:	4100 p, 2200 p, 1200 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	500710 प्रत्येक
Stamps Printed	:	500710 each
मुद्रित मिनियेचर शीट	:	1.20 लाख
Miniature Sheet Printed	:	1.20 lakh
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक
Printer	:	India Security Press, Nashik

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00